विस्तृत रूपरेखा

I. तैयारी का समय (1:1-13)

क. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला (1:1-8)

ख. यीशु का बपतिस्मा और परीक्षा (1:9-13)

II. यीशु की सार्वजनिक सेवकाई: अपने चेलों को बुलाने से लेकर पतरस के अंगीकार कि वह मसीह है तक (1:14-8:38)

क. अध्याय 1 (क्रमश:)

1. मसीहा की सेवकाई गलील में आरम्भ (1:14, 15)
2. शमोन पतरस, अंद्रियास, याकूब और यूहन्ना को बुलाना (1:16-20)
3. उसकी चंगाइयों का आरम्भ (1:21-34)
   - क. आश्चर्यकर्म 1: आराधनालय में उसका उपदेश और दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति को चंगा करना (1:21-28)
   - ख. आश्यर्चकर्म 2: पतरस की सास को चंगा करना (1:29-31)
   - ग. बहुत से लोगों को चंगा करना (1:32-34)
4. प्रार्थना के लिए एकांत का उसका समय (1:35-39)
5. आश्चर्यकर्म 3: कोढ़ी को चंगा करना (1:40-45)

ख. अध्याय 2

1. आश्चर्यकर्म 4: लकवे के रोगी को चंगा करना (2:1-12)
2. लेवी (मत्ती) का बुलाया जाना (2:13, 14)
3. मत्ती के घर में भोजन (2:15-17)
4. उपवास रखने पर विवाद और यीशु के उदाहरण (2:18-22)
5. सब्त के दिन बालें तोड़ने पर विवाद और यीशु का जवाब (2:23-28)

ग. अध्याय 3

1. आश्चर्यकर्म 5: सूखे हाथ वाले आदमी को चंगा करना (3:1-6)
2. बड़ी भीड़ और दुष्टात्माओं का अंगीकार कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (3:7-12)
3. बारह का चुना जाना और सामर्थ दिया जाना (3:13-19)
4. विरोध जिसका सामना यीशु ने किया (3:20-27)
   - क. ''उसका चित ठिकाने नहीं था'' (3:20, 21)
   - ख. ''उसमें शैतान है'' (3:22)
   - ग. यीशु का जवाब (3:23-27)
5. पवित्र आत्मा की निंदा करने के बारे में यीशु की चेतावनी (3:28-30)
6. यीशु का परिवार (3:31-35)

घ. अध्याय 4

1. राज्य से सम्बन्धित दृष्टांत (4:1-34)
    क. बीज बोने वाले (या अलग-अलग भूमि का दृष्टांत) (4:1-9)
    ख. बाहर वाले, आज्ञा मानने को तैयार नहीं (4:10-12)
    ग. बोने वाले के दृष्टांत की व्याख्या (4:13-20)
    घ. दीए का दृष्टांत (4:21-25)
    ङ. बड़ने वाले बीज का दृष्टांत (4:26-29)
    च. राई के बीज का दृष्टांत और निष्कर्ष (4:30-34)
2. आश्चर्यकर्म 6: गलील की झील पर आंधी को शांत करना (4:35-41)

ङ. अध्याय 5

1. आश्चर्यकर्म 7: दुष्टात्मा से ग्रस्त एक गिरासेनी का चंगा होना (5:1-20)
    क. कब्रों में एक आदमी (5:1-5)
    ख. दुष्टात्माओं का यीशु में विश्वास (5:6-13)
    ग. यीशु को मिली जुली प्रतिक्रियाएं (5:14-20)
2. याइर की अपनी बेटी को चंगा करने की विनती (5:21-24)
3. आश्चर्यकर्म 8: लहू बहने के रोग वाली स्त्री को चंगा करना (5:25-34)
4. आश्चर्यकर्म 9: याईर की बेटी को जिलाना (5:35-43)

च. अध्याय 6

1. नासरत में मसीह का निरादर (6:1-6)
2. बारह को प्रचार करने और आश्यर्चकर्म करने के लिए भेजा गया (6:6-13)
3. हेरोदेस का मसीह को जी उठा यूहन्ना मानना (6:14-20)
4. यूहन्ना की मृत्यु का दृश्य (6:21-29)
5. आश्चर्यकर्म 10: महिलाओं और बच्चों के अलावा, पांच हज़ार पुरुषों को खिलाना (6:30-44)
6. आश्यर्चकर्म 11: यीशु का गलील की झील पर चलना (6:45-52)
7. गनेसरत के निकट चंगाइयां (6:53-56)

छ. अध्याय 7

1. परम्परा की अवहेलना करने के लिए यीशु की निंदा (7:1-23)
    क. यीशु के आस पास ''विशेषज्ञ'' (7:1-4)
    ख. यीशु रस्मी शुद्धता के प्रश्नों पर यीशु का जवाब (7:5-13)
    ग. वास्तविक अशुद्ध का कारण (7:14-23)
2. उत्तर की ओर जाना (7:24)
3. आश्चर्यकर्म 12: सुरूफिनीकी स्त्री की बेटी की चंगाई (7:24-30)
4. आश्चर्यकर्म 13: बहरे और हकले व्यक्ति को चंगा करना (7:31-37)

ज. अध्याय 8

1. आश्यर्चकर्म 14: एक और भीड़ को खिलाना (8:1-10)

2. फरीसियों का यीशु के साथ फिर से वाद-विवाद (8:11-13)
3. फरीसियों का खमीर (8:14-21)
4. आश्यर्चकर्म 15: बैतसैदा में एक अंधे को चंगा करना (8:22-26)
5. पतरस का अच्छा अंगीकार: ''तू मसीह हैं'' (8:27-30)
6. यीशु की पहली पेशनगोई कि उसे ठुकराया और मार डाला जाना था (8:31, 32)
7. पतरस की डांट और फिर यीशु की पतरस को डांट (8:32, 33)
8. चेला होने का अर्थ (8:34-38)

III. यीशु की सार्वजनिक सेवकाई जारी: रूपांतर से यरूशलेम में उसके विजयी प्रवेश तक (9:1-11:11)

क. अध्याय 9

1. राज्य का सामर्थ के साथ आना (9:1)
2. यीशु का रूपांतर (9:2-10)
3. एलिय्याह के आने की चर्चा (9:11-13)
4. आश्चर्यकर्म 16: दुष्टात्मा ग्रस्त लड़के को चंगा करना (9:14-29)
5. अपनी मृत्यु के विषय में यीशु की दूसरी भविष्यद्वाणी (9:30-32)
6. दीनता, ईर्ष्या और सहनशीलता के पाठ (9:33-41)
7. नरक से बचने के लिए कठोर कार्रवाई (9:42-48)
8. ''आग से नमकीन'' (9:49, 50)

ख. अध्याय 10

1. तलाक से सम्बन्धित यीशु की शिक्षा (10:1-12)
2. बच्चों को आशीष देना (10:13-16)
3. धनी, युवा हाकिम (10:17-22)
4. धन का खतरा (10:23-27)
5. बलिदान से भरे जीवन के लिए बड़ा प्रतिफल (10:28-31)
6. यीशु की अपनी मृत्यु की तीसरी भविष्यद्वाणी (10:32-34)
7. याकूब और यूहन्ना की स्वार्थी महत्वाकांक्षा (10:35-40)
8. चेलों का बड़े होने का अर्थ सीखना (10:41-45)
9. आश्चर्यकर्म 17: अंधे बरतिमाई की चंगाई (10:46-52)

ग. अध्याय 11 (भाग 1)

1. यरूशलेम में विजयी प्रवेश (11:1-11)

IV. यरूशलेम में यीशु का आगे उपदेश (11:12-14:31)

क. अध्याय 11 (भाग 2)

1. अंजीर के फल-रहित पेड़ को श्राप देना (11:12-14)
2. मंदिर को शुद्ध करना (11:15-19)

3. अंजीर का पेड़ सूख गया और विश्वास के परिणाम (11:20-23)
4. प्रार्थना के लिए शर्तें (11:24-26)
5. यीशु के अधिकार पर सवाल उठाया गया (11:27-33)

ख. अध्याय 12
1. दुष्ट किसानों का दृष्टान्त (12:1-12)
2. कैसर को कर देना (12:13-17)
3. विवाह और मरने के बाद की स्थिति का सदूकियों का प्रश्न (12:18-27)
4. सबसे बड़ी आज्ञा (12:28-34)
5. यीशु, प्रभु भी और मसीह भी (12:35-37)
6. शास्त्रियों का आडम्बर (12:38-40)
7. कंगाल विधवा का दान (12:41-44)

ग. अध्याय 13
1. यरूशलेम का विनाश (13:1, 2)
2. अलग-अलग चिह्न (13:3-23)
   क. चेलों के प्रश्न (13:3, 4)
   ख. ''पहले के'' चिह्न (13:5-13)
      (1) झूठे मसीह (13:5, 6)
      (2) युद्ध (13:7, 8)
      (3) भूकंप और अकाल (13:8)
      (4) सताव और घृणा (13:9-13)
   ग. ''निकट के'' चिह्न (13:14-23)
      (1) ''उजाड़ने वाली घृणित वस्तु'' (13:14-16)
      (2) चुने हुओं के कारण उन दिनों को घटाया गया (13:17-20)
      (3) झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता (13:21-23)
3. ''उन दिनों में'' (13:24-27)
4. यीशु की वापसी (13:28-33)
   क. अंजीर के पेड़ का दृष्टांत (13:28-31)
   ख. अज्ञात समय (13:32, 33)
5. चौकस रहने की उसकी अंतिम चेतावनी (13:34-37)

घ. अध्याय 14 (भाग 1)
1. दो षड्यन्त्र और यीशु के सिर पर तेल उण्डेला जाना (14:1-11)
   क. यीशु की हत्या का षड्यन्त्र (14:1, 2)
   ख. बैतनिय्याह में यीशु के सिर पर तेल उण्डेला जाना (14:3-9)
   ग. यीशु को पकड़वाने का षड्यन्त्र (14:10, 11)
2. अंतिम भोज (14:12-21)
   क. फसह की तैयारियां (14:12-16)

ख. फसह का भोजन और पकड़वाए जाने की भविष्यद्वाणी (14:17-21)

3. प्रभु भोज (14:22-25)

क. फसह का भोजन खत्म होने की ओर (14:22)

ख. प्रभु-भोज की स्थापना (14:22-25)

4. यरूशलेम से जैतून के पहाड़ की ओर जाना (14:26-31)

क. ''भजन गाकर'' (14:26)

ख. चेलों के इनकारों की यीशु की भविष्यद्वाणी (14:27-31)

V. गतसमनी में यीशु की प्रार्थनाएं और उसका विश्वासघात और पकड़वाया जाना (14:32-52)

क. अध्याय 14 (भाग 2)

1. गतसमनी में यीशु की पीड़ा (14:32-42)

क. ''मेरा मन बहुत उदास है'' (14:32-36)

ख. ''क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका?'' (14:37-42)

2. यीशु का विश्वासघात और पकड़वाया जाना (14:43-52)

VI. यीशु की पेशियां और पतरस के इनकार (14:53-15:20)

क. अध्याय 14 (भाग 3)

1. महायाजक काइफा के सामने यीशु (14:53-65)

क. झूठे गवाहों की गवाहियों का मेल न खाना (14:53-59)

ख. यीशु का दोषी ठहराया गया (14:60-65)

2. पतरस के इनकार (14:66-72)

ख. अध्याय 15 (भाग 1)

1. पिलातुस के सामने यीशु (15:1-15)

क. यीशु के उत्तर न देने पर पिलातुस की हैरानी (15:1-5)

ख. यीशु या बरअब्बा? (15:6-11)

ग. पिलातुस का भीड़ तंत्र के सामने हार मान लेना (15:12-15)

2. सिपाहियों द्वारा ठट्ठा किया जाना (15:16-20)

VII. यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना और दफ़नाया जाना (15:21-47)

क. अध्याय 15 (भाग 2)

1. शमौन कुरेनी (15:21, 22)
2. यीशु का दाखरस लेने से इनकार, उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना और उसके कपड़ों का बांटा जाना (15:23-28)
3. यीशु का ठट्ठा किया जाना (15:29-32)

ख. अध्याय 15 (भाग 3)

1. अंधियारा छा जाना और यीशु की मृत्यु (15:33-37)
2. पर्दा, सूबेदार और देख रही स्त्रियां (15:38-41)
3. यीशु के शव का दफ़नाया जाना (15:42-47)

VIII. यीशु का पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण (16:1-20)

क. अध्याय 16 (भाग 1)
1. ''सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर'' (16:1-4)
2. कब्र पर स्त्रियां (16:5-8)

ख. अध्याय 16 (भाग 2)
1. यीशु के दर्शन (16:9-14)
   क. मरियम मगदलीनी को (16:9-11)
   ख. दो चेलों को (16:12, 13)
   ग. ग्यारहों को (16:14)
2. उसका ग्रेट कमीशन (16:15, 16)
3. ईश्वरीय सहायता का उसका वादा (16:17, 18)
4. उसका स्वर्गारोहण और चिह्नों के द्वारा वचन को पक्का करना (16:19, 20)